संसारे ४ स्मिन्नसारे परिणातितरले हे गती पण्डिताना तत्त्वज्ञानामृताम्भः प्रवलुलितिधया यातु कालः कदाचित् । नो चेन्सुम्धाङ्गनानां स्तनज्ञधनधनाभागसंभागिनीनां स्थूलापस्थस्थलीषु स्थिगितकर्तलस्पर्शलोलोखमानाम् ॥ ३०८९ ॥

Έν ματαίφ τῷδε τῷ βίφ κατὰ τοὺς καρποὺς σφαλερῷ ὄντι δύο εἰσὶν όδοὶ τῶν σοφῶν τοτε μεν διαγόντων τὸν χρόνον τῷ κινεῖσβαι τὸν νοῦν νηχόμενον ὡς ἐν ὕδατι ἐν τῷ τῆς τὰληβοῦς γνώσεως νέκταρι εἰ δὲ μή, τῷ σπουδάζειν ὅπως κρυφβέντι τῷ βέναρι ἄψονται τοῦ σαρκώδους βουβῶνος χαριεσσῶν κορῶν, αἴτινες μαστῶν καὶ γλουτῶν στιφρῷ κέχρηνται ὄγκφ.

संसारे।द्धिनिस्तार्ष्यद्वी न द्वीपसी । स्रतरा डस्तरा न स्पुर्याद रे मिंद्रिसणाः ॥ ३०८५ ॥

Der Pfad, der über das Meer der Welt hinüberführt, wäre nicht gar lang, wenn nicht, o Leutchen, die reizenden Weiber, über die man schwer hinwegkommt, dazwischen wären.

संस्थितस्य गुणात्कर्षः प्रायः प्रस्पुरति स्पुटम्। दग्धस्यागुरुखएउस्य स्पारीभवति तीर्भम्॥ ३०८३॥

Die ausserordentlichen Eigenschaften eines Mannes pflegen erst nach seinem Tode deutlich zu Tage zu treten: der Wohlgeruch des Aloeholzes verbreitet sich erst, nachdem es verbrannt worden ist.

संक्तवाख्या s. Spruch 3104.

संक्ताः शीलसंपन्नाः s. सुभटाः शीलसंपन्नाः.

संकृतिः श्रेयसी पुंसां स्वकुलैरूल्पकैरपि । तुषेणापि परित्यक्ता न प्रराकृति तएडुलाः ॥ ३०८३ ॥

Eine Verbindung mit den Stammgenossen, seien diese auch noch so unbedeutend, bringt Segen: Reiskörner, fehlte ihnen auch nur die Hülse, schiessen nimmer auf.

> स किंसखा साधु न शास्ति ये। ४धिपं कितान यः संशृणुते स किंप्रभुः। सरानुकूलेषु कि कुर्वते रतिं नृषेष्ठमात्येषु च सर्वसंपरः॥ ३०८५॥

3081) Вилктя. 1, 19 Вонг. 28 lith. Ausg. II.
b. पुलक्तित st. प्रवलुलित, यस्तु st. यातु, यातु कालाः. o. भर् st. घन, घनाभाजः संसर्गिपानां und संसङ्गिनीनां st. संभागिनीनां. d.
स्यूलोप्रस्य, लोलोग्यतानाम्.

3082) Внактр. 1,68 Вонс. 74 Навв. 44 lith. Ausg. II. a. संसार तव निः 3083) Dṛṣнṛṇntaç. 8 bei Habb. 217. d. हफा॰ सा॰ unsere Aenderung für हफारी भ-वित सार्भे.

3084) Hir. I, 31. o. d. परित्यक्तस्तापुटुला न प्रराकृति. Vgl. Sprach 3095 und 3097.

3085) KIR. 1, 5.